राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर

अपील संख्या 780/2024

गोपाल लाल रावल —अपीलार्थी

<u>बनाम</u>

1. शासन सचिव, पशुपालन विभाग, राजस्थान जयपुर।
2. निदेशक, पशुपालन विभाग, जयपुर।
3. पशु चिकित्सा अधिकारी/प्रभारी, पशु चिकित्सालय, बोरेला, तहसील आसिन्द, जिला भीलवाड़ा।

—प्रत्यर्थीगण

प्रस्तुत करने की दिनांक : 26.02.2024
आदेश की दिनांक :

<u>उपस्थित —</u>
अपीलार्थी की ओर से : श्री सुखराज सिंह राठौड़, अधिवक्ता
प्रत्यर्थी विभाग की ओर से : श्री हेमन्त धारीवाल, राजकीय अधिवक्ता/कैवियटर

समक्ष :— अनन्त भंडारी, सदस्य (न्यायिक)
लेखराज तोसावड़ा, सदस्य

<u>आदेश</u>

1. मामलें की आवश्यक प्रकृति को देखते हुए राजस्थान सिविल सेवा (सेवा मामलों के लिए अपील अधिकरण) अधिनियम, 1976 की धारा 4ए के उपबन्ध में शिथिलिता प्रदान करते हुए उक्त अपील की ग्राह्यता एवं स्थगन प्रार्थना पत्र पर सुनवाई की गई।
2. अपीलार्थी के विद्वान् अधिवक्ता ने कथन किया है कि अपीलार्थी की प्रथम नियुक्ति पशुधन सहायक के पद पर दिनांक 07.02.2020 (अनुलग्नक—2) को सब सेन्टर बोरेला, तहसील आसिन्द, जिला भीलवाड़ा में हुई थी। तब से अपीलार्थी वहीं कार्यरत है। प्रत्यर्थी विभाग के आदेश दिनांक 22.02.2024 (अनुलग्नक—1) के द्वारा अपीलार्थी का स्थानान्तरण सब सेन्टर बोरेला, तहसील आसिन्द, जिला भीलवाड़ा से उपकेन्द्र सोडावास, पाली में बिना किसी प्रशासनिक आवश्यकता के 350 कि.मी. दूर किया गया है। अपीलार्थी को यात्रा भत्ता एवं योगकाल भी नहीं दिया गया है। अतः अपील अपीलार्थी स्वीकार फरमाई जाकर प्रत्यर्थी विभाग के आदेश दिनांक 22.02.2024 को अपीलार्थी की सीमा तक अपास्त फरमाया जावे एवं प्रत्यर्थी विभाग को निर्देशित करें कि अपीलार्थी को वर्तमान पदस्थापित स्थान पर ही कार्यरत रखे जाने के आदेश फरमाये जावे।

3. प्रत्यर्थी विभाग की ओर से विद्वान अधिवक्ता केवियटर के रूप में उपस्थित हुए, उन्होंने कथन किया कि आलोच्य आदेश प्रशासनिक आवश्यकता से जारी किया गया है, जिसमें किसी प्रकार की कोई दुर्भावना नहीं है। अतः अपील खारिज की जावे।

4. हमने उभय पक्ष के विद्वान अधिवक्तागण की बहस सुनी तथा पत्रावली पर उपलब्ध तमाम अभिलेख का अनुशीलन कर मनन किया।

5. प्रकरण के तथ्यों, अभिलेख एवं अभिवचनों से यह प्रकट होता है कि अपीलार्थी की प्रथम नियुक्ति पशुधन सहायक के पद पर दिनांक 07.02.2020 (अनुलग्नक–2) को सब सेन्टर बोरेला, तहसील आसिन्द, जिला भीलवाड़ा में हुई थी। तब से अपीलार्थी वहीं पर कार्यरत है। प्रत्यर्थी विभाग के आदेश दिनांक 22.02.2024 (अनुलग्नक–1) के द्वारा अपीलार्थी का स्थानान्तरण सब सेन्टर बोरेला, तहसील आसिन्द, जिला भीलवाड़ा से उपकेन्द्र सोडावास, पाली में प्रशासनिक कारणों से राज्यहित में किया गया है। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि सेवाविधि का यह सुस्थापित सिद्धान्त है कि स्थानान्तरण सेवा का एक अभिन्न तत्व होता है। नियोक्ता का यह विशेषाधिकार है कि वह अपने कार्मिक की श्रेष्ठ सेवायें किस स्थान पर उसे पदस्थापित कर वहां की जनता को प्रदान करना चाहता है। किसी कार्मिक को एक ही स्थान पर पदस्थापित रहने का कोई विधिक अधिकार नहीं होता है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने **शिल्पी बोस बनाम बिहार राज्य (ए.आई.आर. 1991 एस.सी. 532)** के प्रकरण में राजकीय कार्मिकों के स्थानान्तरण/पदस्थापन के विषय में निम्न प्रकार अवधारित किया है :–

> *"In our opinion, the Courts should not interfere with a transfer order which are made in public interest and for administrative reasons unless the transfer orders are made in violation of any mandatory statutory rule or on the ground of malafide. A Government servant holding a transferable post has no vested right to remain posted at one place or the other, he is liable to be transferred from one place to the other. Transfer orders issued by the competent authority do not violate any of his legal rights."*

6. अपीलार्थी ने अपील में स्वंय का 350 कि.मी. दूर स्थानान्तरण किए जाने का अभिकथन भी किया है, परन्तु इस आधार पर आलोच्य स्थानान्तरण आदेश में हस्तक्षेप किया जाना उचित नहीं है। इस सम्बन्ध में माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय ने **भगवानदास मित्तल एवं अन्य बनाम**

राजस्थान राज्य (डब्ल्यू.एल.सी. 2007(2) 276) में निम्न प्रकार अवधारित किया है :–

> *"So far as plea that the transfer has been made to a far away place, it cannot be interfered with for the reason that the employee has to work in the State wherever he/she is posted. The plea of posting at a distance from one place to another is immaterial. It does not involve any violation of service Rule."*

7. अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अपीलार्थी की अपील बलहीन एवं सारहीन होने के कारण मय स्थगन प्रार्थना पत्र के खारिज की जाती है।
8. आदेश आज दिनांक .... को हमारे द्वारा लिखाया जाकर मुद्रांकित एवं हस्ताक्षरित कर उद्घोषित किया गया।

(लेखराज तोसावडा)
सदस्य

(अनन्त भंडारी)
सदस्य (न्यायिक)